उन्नत तकनीकी से डेयरी उद्योग में सफलता से आई खुशहाली

पशुपालक का नाम	:	श्री गौरीशंकर
पिता का नाम	:	श्री किशनलाल बोराणा
उम्र	:	52 वर्ष
पता	:	मिल्क मैन कॉलोनी, जोधपुर
शिक्षा	:	स्नातक
मोबाईल नं.	:	9829160145

आज के समय में ग्रामीण पशुपालन को छोड़ शहर की ओर पलायन कर रहे हैं, लेकिन जोधपुर जिले के गौरीशंकर बोराणा ने स्नातक कर शहर में ही पशुपालन करने की ठानी। युवा एवं सजग गौरीशंकर ने शुरू में केवल अपने घर की आवश्यकता के अनुसार पशुपालन को अपनाया परंतु समय के साथ दूध की उपयोगिता एवं बाजार की जरूरत को ध्यान में रखते हुए पशुपालन को डेयरी व्यवसाय के रूप में शुरू किया। गौरीशंकर ने पशु विज्ञान केंद्र, जोधपुर के संपर्क में आने के बाद केंद्र द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण शिविरों में भाग लिया और उन्नत पशुपालन करने हेतु संतुलित पशु आहार, पशु आहार में खनिज लवणों का महत्व, कृत्रिम गर्भाधान का महत्व, टीकाकरण एवं कृमिनाशक दवाओं का महत्व व ग्याभिन गायों की देखभाल एवं प्रबंधन आदि विषयों की जानकारी प्राप्त की। गौरीशंकर ने पशु विज्ञान केंद्र, जोधपुर में संपर्क किया जहां उनको अपने क्षेत्र की दुधारू नस्लों और सफल डेयरी व्यवसाय के बारे में जानकारी मिली और उनसे प्रोत्साहित होकर अपना व्यवसाय शुरू कर दिया। अब गौरीशंकर के पास 35 गायें हैं जिसमें मुख्यतः गिर, थारपारकर व संकर नस्ल की गायें हैं जिनसे वे 200 लीटर दूध प्रतिदिन ले रहे हैं। इस व्यवसाय से इनकी वार्षिक आय 6 से 7 लाख रुपये तक हो जाती हैं। गौरीशंकर का कहना है कि पशु विज्ञान केंद्र, जोधपुर से मिली उन्नत और नवीन तकनीकों का उपयोग कर पशु प्रबंधन कर रहे हैं। वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त कर उसका उपयोग करने से बहुत लाभ हुआ है। गौरीशंकर डेयरी व्यवसाय में सफल उद्यमी के रूप में पहचान बनाकर शहर के अन्य युवाओं के लिए भी प्रेरणा स्रोत बनकर उभरे है।

घेवर राम ने मुर्गीपालन से बदली घर की आर्थिक स्थिति

पशुपालक का नाम	:	श्री घेवर राम भाटी
पिता का नाम	:	श्री रूपा राम भाटी
उम्र	:	40 वर्ष
पता	:	गन्डेरों की ढाणी, जोधपुर
शिक्षा	:	12वीं
मोबाईल नं.	:	9166147516

घेवर राम भाटी जिला मुख्यालय से 15 किलोमीटर दूरी पर स्थित जोधपुर जिले के गन्डेरों की ढाणी के निवासी हैं। उनके आसपास के क्षेत्र में कृषि भूमि की उपलब्धता बहुत कम है। ज्यादातर लोग खानों में मजदूरी कर मुश्किल से जीवनयापन करते हैं साथ ही सिलिकोसिस जैसी भयंकर बीमारियों से ग्रसित हो जाते हैं। घेवर राम ने इन सब से अलग हटकर अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने की सोच ली। उन्होंने अपने निवास पर 5 मुर्गी से बैकयार्ड मुर्गी पालन की इकाई की स्थापना की। इस मुर्गी फार्म पर घेवर राम ने पशु विज्ञान केंद्र, जोधपुर से उन्नत मुर्गी पालन का प्रशिक्षण लेकर मुर्गी की उन्नत नस्ल प्रतापधन को पालना शुरू किया। उन्होंने घर के पीछे खाली जगह पर छोटा सा शैड बनाकर 50 देशी मुर्गी रखने का व्यवसाय प्रारंभ किया और अंडे और मांस बेचकर अपनी आजीविका चलाने लगे। धीरे–धीरे पशु विज्ञान केंद्र, जोधपुर के लगातार मार्गदर्शन में उनका एक अच्छा व्यवसाय शुरू हो गया। घेवर राम ने व्यवसाय के प्रथम वर्ष ही 80000 रुपये की वार्षिक आय प्राप्त की। वे गांव के युवाओं के लिए एक प्रेरणा स्रोत बन गए हैं। वे पशु विज्ञान केंद्र के नियमित संपर्क में रहने लगे तथा संबंधित पशुपालन तकनीकों की जानकारी प्राप्त करने के लिए पशु विज्ञान केंद्र द्वारा संचालित व्हाट्सएप ग्रुप से भी सदस्य रूप में जुड़े हैं।

कैलाश ने ढूंढ़ निकाला सूकून से जीने का तरीका

पशुपालक का नाम	:	श्री कैलाश पंवार
पिता का नाम	:	श्री तुरजी पंवार
उम्र	:	44 वर्ष
पता	:	गली नं. 4 मिल्क मैन कॉलोनी, जोधपुर
शिक्षा	:	10वीं
मोबाईल नं.	:	7615010098

जोधपुर शहर के कैलाश पंवार एक मध्यमवर्गीय परिवार से है लेकिन माध्यमिक शिक्षा तक पढ़े–लिखे होने के बावजूद अपनी मेहनत और दूरदर्शिता के बूते आज एक प्रगतिशील पशुपालक के रूप में जाने पहचाने जाते हैं। कैलाश ने उन्नत नस्ल के पशुओं का पालन और वैज्ञानिक तौर–तरीकों को अपनाकर सफलता के नए आयाम स्थापित किए हैं। कैलाश पशु विज्ञान केंद्र, जोधपुर के निरंतर संपर्क में रहते हुए और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेकर पशुपालन में नस्ल संवर्द्धन, कृत्रिम गर्भाधान, खनिज लवण की उपयोगिता, संतुलित पशु आहार, कृमिनाशक दवाई पिलाना, टीकाकरण आदि की जानकारी प्राप्त करते रहते है। सर्वप्रथम 5 गायों से एक छोटा सा डेयरी उद्योग स्थापित किया और इसके पश्चात पशु विज्ञान केंद्र, जोधपुर के संपर्क में आए। यहां से इन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त कर डेयरी व्यवसाय प्रारंभ किया। वर्तमान में कैलाश के पास गिर, थारपारकर व विदेशी नस्ल की 30 गायें हैं जिससे प्रतिदिन 150 लीटर दूध उत्पादन लेते हैं। इस व्यवसाय से इनकी वार्षिक आय 4 से 5 लाख तक हो जाती हैं। साथ ही उन्होंने अपने यहां दो मजदूरों को भी रोजगार दे रखा हैं जो गायों की देखभाल एवं उनके खान–पान, साफ–सफाई आदि के कार्य करते हैं। दूध उत्पादन के साथ–साथ उन्नत नस्ल की गाय तैयार करके विक्रय भी करते हैं। कैलाश ने पशुपालन अपनाकर सफलता की नई ऊंचाइयों को छुआ हैं और अन्य लोगों के लिए प्रेरणा के स्रोत बने हैं।

बकरियां बनी एक नियमित आय का जरिया

पशुपालक का नाम	:	श्री पवन कुमार
पिता का नाम	:	श्री श्रीचन्द चौधरी
उम्र	:	25 वर्ष
पता	:	काली बेरी, जोधपुर
शिक्षा	:	बीए
मोबाईल नं.	:	9772023766

जोधपुर शहर के युवा पशुपालक पवन कुमार को कभी काम तथा नौकरी की तलाश करने की जरूरत नहीं पड़ी। 21 वर्ष की अवस्था में महाविद्यालय से बीए के छात्र रहे पवन कुमार ने बकरी पालन को एक व्यवसाय के रूप में शुरू करने की जो ठान ली थी। उनके परिवार में दो–तीन बकरी सदैव रहती थी जिसका उपयोग घर की जरूरतों को पूरा करने के लिए किया जाता रहा। यहीं से उन्हें बकरी पालन की प्रेरणा मिली और 5 बकरी से व्यवसाय की शुरूआत की। धीरे–धीरे 5 से 35 बकरी हो गई। पवन अपने खेत के पास ही आधे खुले बाड़े में अपनी बकरियों को रखता है और उनके लिए उपयुक्त घास व दलहनी चारा अपने खेत में ही उगाता है। इस तरह मांस, खाल, खाद एवं दूध से लगभग 1.50 लाख रुपये आर्थिक लाभ प्राप्त करते है। पशु विज्ञान केंद्र, जोधपुर से प्रशिक्षण लेने के बाद पवन का मानना है कि वह अपने आप को बकरी पालन में ओर अधिक सक्षम बना पाया। पशु विज्ञान केंद्र के निरंतर संपर्क में रहने से दवा, टीकाकरण एवं प्रबंधन संबंधी विभिन्न जानकारी का लाभ भी उसे मिलता है। आज वह क्षेत्र के पशुपालकों में अग्रणी है। 25 वर्षीय पवन कुमार ने युवावस्था में ही सूझबूझ और दूरदर्शिता का परिचय दिया और आज वे अपने पैरों पर खड़े होकर अपने परिवार का भरण–पोषण भली प्रकार से करते हैं। बेरोजगार घूम रहे युवाओं के लिए एक प्रेरणा के स्रोत बने हैं।

बेरोजगारों के लिए प्रेरणा स्रोत बने श्याम सुंदर

पशुपालक का नाम	:	श्री श्याम सुंदर सोलंकी
पिता का नाम	:	श्री हीरालाल सोलंकी
उम्र	:	30 वर्ष
पता	:	बड़ली, पं.सं. कैरू, जोधपुर
शिक्षा	:	स्नातक
मोबाईल नं.	:	7690911918

पशुपालन व्यवसाय को आय का स्रोत बना कर सफल हुए युवा श्याम सुंदर ने कई युवाओं के लिए उदाहरण प्रस्तुत किया हैं। श्याम सुंदर ने प्रशिक्षण में पशुओं के रखरखाव, ग्याभिन गायों की देखभाल, पशुओं की नस्ल सुधार, संतुलित आहार, टीकाकरण, कृमिनाशक दवाओं व खनिज लवण के उपयोग की जानकारी प्राप्त की। वर्तमान में श्यामसुंदर के पास देशी और संकर नस्ल की 50 गायें हैं। श्यामसुंदर के अनुसार इन पशुओं से प्रतिदिन औसतन 250 लीटर दूध उत्पादन लेते हैं और इस दूध की बिक्री से 6–7 लाख रुपये वार्षिक आय अर्जित करते हैं। केंद्र से जानकारी प्राप्त कर श्याम सुंदर स्वच्छ दूध उत्पादन के लिए पशुओं में दूध दोहन भी मिल्किंग मशीन द्वारा करते हैं। श्याम सुंदर का कहना है कि केंद्र से मिली नवीन तकनीकों का उपयोग कर पशु प्रबंधन कर रहे हैं। श्यामसुंदर अपने पशुओं के स्वास्थ्य और पोषण पर भी पूरी नजर रखते हैं। श्याम सुंदर का कहना है कि वह समय–समय पर पशुओं को एफ.एम.डी, गलघोटू व लंगड़ा बुखार का टीकाकरण करवाता है जिससे पशुओं में किसी प्रकार की कोई बीमारी नहीं होती और साथ ही समय–समय पर कृमिनाशक दवाई भी पिलाई जाती है। श्याम सुन्दर केंद्र से लगातार संपर्क में रहकर समय–समय पर प्रशिक्षण प्राप्त करते रहते हैं। श्याम सुंदर जैसे जागरूक युवा पशुपालक वर्तमान पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।